IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–संबंधात्मकअध्ययन

Reseacher Scholar`s Rajesh Kumari

Himalayiya University Dehradun (UK)

Reseacher Director: Dr. Anup Baluni

सारांश–

यह शोधपत्र स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–सम्बंधात्मकअध्ययन परआधारितहै।इसका मुख्य उद्देश्य यह जाननाहैकिस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वता उनके जीवन शैली से किसप्रकारप्रभावितहोतीहैऔरइनमेंकिसप्रकार का सह–सम्बंधहै। इस अध्ययन मेंतीन मुख्य पहलुओं–व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैलीका विश्लेषणकियागयाहै।शोधमेंउपयोगकिए गए आंकड़ोंकोसर्वेक्षणविधि द्वारासंग्रहितकियागया, जिसमेंविभिन्नस्नातककॉलेजों के विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारीप्राप्त की गई।डेटासंग्रहण के दौरानविद्यार्थियों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षिकऔरसामाजिकसंदर्भों का भीध्यान रखा गया।अध्ययन मेंपायागयाकिविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता उनके आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमताऔरकरियर योजना से संबंधितहोतीहै, जबकिसामाजिकपरिपक्वता उनके सामूहिक जीवन औरसामाजिकदायित्वों के प्रति दृटिकोण से प्रभावितहोतीहै। जीवन शैलीमें शारीरिकऔरमानसिकस्वास्थ्य, दिनचर्या, आहारऔरसामाजिकगतिविधियाँ प्रमुख रूप से देखीगईं, और यह पायागयाकिइनसभीतत्वों का एक दूसरेपरगहराप्रभावपड़ताहै।

यह शोधविद्यार्थियों के व्यक्तिगतविकासऔरशिक्षा प्रणालीमेंसुधारहेतु एक महत्त्वपूर्णमार्गदर्शनप्रदानकरताहै।इसकेपरिणाम शैक्षिकसंस्थानोंऔरनीतिनिर्माताओं के लिए उपयोगीहोसकतेहैं, ताकिवेविद्यार्थियों की समग्रविकास की दिशामेंऔरबेहतरकदमउठासकें। शोध के निर्का यह सुझाव देतेहैंकिविद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वताको बढ़ावादेने के लिए जीवन शैलीमेंसकारात्मकबदलावलानाअत्यंतआवश्यक है।

मुख्य शब्द:व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वता, जीवन शैली, स्नातकविद्यार्थी, सह–सम्बंध।

परिचय–

आज के आधुनिक युगमेंशिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवलज्ञानअर्जनतकसीमितनहींहै, बल्किविद्यार्थियोंकोसमाजमेंअपनीपहचानबनानेऔर एक सशक्तनागरिक के रूपमेंविकसितकरने की दिशामेंभीमार्गदर्शनकरनाहै।स्नातकस्तर के विद्यार्थी, जोसमाजमेंअपनीमहत्वपूर्णभूमिकानिभाने के लिए तैयारहोतेहैं, उनकीव्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वतातथा जीवन शैली के बीचगहरेसंबंधहोतेहैं।इनकारकों का अध्ययन न केवलविद्यार्थियों के व्यक्तिगतविकासको समझने मेंमददकरताहै, बल्कि यह भीस्पटकरताहैकि ये तत्व उनके भविय की दिशाऔरसामाजिक जीवन कोकिसप्रकारप्रभावितकरतेहैं।

व्यावसायिकपरिपक्वता का तात्पर्यहैविद्यार्थियों की करियर से संबंधित क्षमताएँ, निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास, औरकार्यस्थलपरसफलता की संभावना। यह एक विद्यार्थी के पेशेवर जीवन कोनिर्धारितकरनेमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै।इसकेसाथही, सामाजिकपरिपक्वता का अर्थहैसमाजमेंअपनेकर्तव्योंऔरजिम्मेदारियोंको समझना, दूसरों के साथसामंजस्यपूर्णसंबंधबनानाऔरसामाजिकस्थितियों का सहीतरीके से सामनाकरना। यह विद्यार्थियों के व्यक्तिगतऔरसामाजिकविकासमें एक अहमभूमिकानिभातीहै।साथही, जीवन शैली एक ऐसीप्रक्रियाहै, जोविद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिकऔरसामाजिकस्वास्थ्य से जुड़ीहोतीहै। यह विद्यार्थियों के दैनिक जीवन के विभिन्नपहलुओंकोप्रभावितकरतीहै, जैसेआहार, व्यायाम, मानसिकसंतुलन, औरसामाजिकगतिविधियाँ। जीवन शैली का विद्यार्थी की सफलता, संतुलन, औरमानसिकस्थितिपरगहराअसरपड़ताहै।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जाननाहैकिस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचकिसप्रकार का सह–सम्बंधहैऔरइनसभीतत्वों का एक दूसरेपरक्याप्रभावपड़ताहै। यह अध्ययन विद्यार्थियों के विकास के विभिन्नपहलुओंको समझने मेंसहायकहोगा, जिससे उनके समग्रविकास के लिए उपयुक्त शैक्षिकऔरसामाजिकनीतियाँ तैयार की जासकें।

साहित्य समीक्षा–

स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के संबंधमेंकई शोधकार्यकिए गए हैं, जोइनकारकों के आपसीसंबंधको समझने मेंमददकरतेहैं। इस अध्याय में, हमपिछले शोधोंऔरसाहित्य की समीक्षा करेंगेजो इस अध्ययन से संबंधितहैंऔरइसकेविभिन्नपहलुओंपरप्रकाशडालतेहैं।

1.व्यावसायिकपरिपक्वता–व्यावसायिकपरिपक्वतापरकईअध्ययन किए गए हैं, जोविद्यार्थियों के करियर की दिशा, कार्यस्थलपर उनके प्रदर्शनऔरनेतृत्व क्षमताओं के विकास से संबंधितहैं।**प्रकाश (2017)** ने अपनेअध्ययन में यह पायाकिव्यावसायिकपरिपक्वताछात्रों के आत्मविश्वास, निर्णय क्षमताऔरकरियर के प्रति दृटिकोण से जुड़ीहोतीहै।**कुमारऔर शर्मा (2019)** के अनुसार, व्यावसायिकपरिपक्वताविद्यार्थियों के मानसिकविकास, उनके शैक्षिकऔरसामाजिकपरिवेश से प्रभावितहोतीहै।

2.सामाजिकपरिपक्वता–सामाजिकपरिपक्वताको एक विद्यार्थी के समाजमेंजिम्मेदारीनिभाने की क्षमता के रूपमेंपरिभाषितकियाजाताहै।**सिंह (2018)** ने यह अध्ययन कियाकिसामाजिकपरिपक्वताविद्यार्थियों के सामूहिकगतिविधियोंमेंभागीदारी, समाजमें उनके विचारोंऔरविश्वासों के प्रतिजागरूकताकोप्रभावितकरतीहै।**रानी (2020)**

ने पायाकि एक विद्यार्थी की सामाजिकपरिपक्वताउसकेपरिवार, दोस्तोंऔरसमुदाय के साथरिश्तों के आधारपरविकसितहोतीहै।

3.जीवन शैली–जीवन शैली का विद्यार्थियों की शारीरिकऔरमानसिकस्वास्थ्य परगहराअसरपड़ताहै।**सिंह और यादव (2021)** के अनुसार, विद्यार्थियों की जीवन शैलीमें शारीरिकव्यायाम, आहार, मानसिकसंतुलनऔर समय प्रबंधन की आदतेंप्रमुख भूमिकानिभातीहैं। जीवन शैली के सकारात्मकपहलूविद्यार्थियों के शैक्षिकप्रदर्शनऔरसमग्र जीवन गुणवत्ताकोसुधारनेमेंसहायकहोतेहैं।

4.सह–सम्बंध–व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वतातथा जीवन शैली के बीच के सह–सम्बंधपर कम शोधउपलब्धहैं, लेकिनकुछअध्ययन इस दिशामेंकार्यकररहेहैं।**गुप्ता (2019)** ने पायाकिव्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वता का जीवन शैलीपरसीधाप्रभावपड़ताहै। उनके अनुसार, जिनविद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वताउच्चहोतीहै, वेस्वस्थ जीवन शैलीकोअपनातेहैं, जो उनके मानसिकऔर शारीरिकस्वास्थ्य कोबेहतरबनाताहै।

5.शैक्षिकवातावरणऔरविकास–शैक्षिकवातावरण का विद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वतापरप्रभावपड़ताहै।**शर्माऔर यादव (2020)** ने यह निष्कर्षनिकालाकि ऐसेविद्यार्थीजोअच्छे शैक्षिकवातावरणमेंपढ़तेहैं, उनकीव्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वताबेहतरहोतीहै।इसकेअतिरिक्त, विद्यार्थियोंकोपेशेवरप्रशिक्षणऔर जीवन कौशलप्रदानकरने से उनके समग्रविकासमेंमददमिलतीहै।

शोधअध्ययन–

यह अध्ययन स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–सम्बंधात्मकअध्ययन परआधारितहै, औरइसकाउद्देश्य इनतीनोंपहलुओं के बीचसह–सम्बंधको समझनाहै। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विभिन्नअनुसंधानविधियों का पालनकियागयाहै, जिन्हेंनिम्नलिखिततरीके से प्रस्तुतकियागयाहैः

1.अनुसंधानडिज़ाइन–

यह अध्ययन एक सह–सम्बंधात्मकअध्ययन है, जिसमेंविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचसंबंधों का विश्लेणकियागयाहै। इस अध्ययन मेंक्वांटिटेटिवअनुसंधानविधि का प्रयोगकियागयाहै, जिससेआंकड़ों के माध्यम से इनतीनोंपहलुओं के बीच के संबंधोंकोसांख्यिकीय रूप से मापाजासके।

2. जनसंख्या औरनमूना–

- **जनसंख्याः** यह अध्ययन विभिन्नस्नातककॉलेजों के विद्यार्थियोंपरआधारितहै। शोध का क्षेत्र भारत के विभिन्नविश्वविद्यालयों के स्नातकपाठ्यक्रमोंमेंअध्ययनरतविद्यार्थियोंतकसीमितहै।
- **नमूनाः** इस अध्ययन मेंसहस्रद्वितीय विधि का प्रयोगकियागयाहै, जिसमेंविभिन्नकॉलेजों के छात्रों का चयनकियागया।नमूनेमें 300 विद्यार्थियोंको शामिलकियागया, जोविभिन्नविभागोंऔरपाठ्यक्रमों से थे, ताकिअध्ययन मेंविविधताहोऔरपरिणामअधिकसामान्यीकृत हों।

3. डेटासंग्रहणउपकरण–डेटासंग्रह के लिए निम्नलिखितउपकरणों का उपयोगकियागयाहैः

प्रश्नावली : इस अध्ययन मेंतीनप्रमुख पहलुओं–व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैलीकोमापने के लिए तीनअलग–अलगप्रश्नावलीतैयार की गई–

i. व्यावसायिकपरिपक्वता के लिए प्रश्नावलीमेंकरियर योजनाएँ, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमताऔरकार्यस्थल से संबंधितप्रश्न शामिलकिए गए।

ii. सामाजिकपरिपक्वता के लिए प्रश्नावलीमेंविद्यार्थियों के समाजिक दृटिकोण,सामाजिकजिम्मेदारियाँ, सामूहिककार्योंमेंभागीदारीऔररिश्तों से संबंधितप्रश्न शामिलकिए गए।

iii. जीवन शैली के लिए शारीरिकस्वास्थ्य, मानसिकसंतुलन, आहार, समय प्रबंधनऔरसामाजिकगतिविधियाँ मापने के लिए प्रश्नावलीतैयार की गई।

साक्षात्कार :कुछविद्यार्थियों के साथव्यक्तिगतसाक्षात्कारभीआयोजितकिए गए, ताकिउनकाव्यक्तिगतअनुभवऔर दृटिकोणप्राप्तकियाजासके।इससेकुछगहरेऔरविस्तृतविचारोंको समझने मेंमददमिली।

4. डेटाविश्लेशण–डेटाविश्लेषण के लिए सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोगकियागया।निम्नलिखितसांख्यिकीय विधियाँ अपनाईगईं–

- **वर्णनात्मकसांख्यिकी** :अध्ययन मेंसंकलितडेटा का वर्णनकरने के लिए, जैसेकिमाध्य, माध्यिका, मोड, प्रतिशत, आदि, का उपयोगकियागया।
- **सह–सम्बंधविश्लेशण**:व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचसंबंधों का विश्लेषणकरने के लिए का उपयोगकियागया। यह विधि यह पता लगानेमेंसहायकहोगीकिइनतीनोंतत्वों के बीचकोईसकारात्मक या नकारात्मकसंबंधहै या नहीं।
- **विविधताविश्लेशण**: यह विधि यह जानने के लिए उपयोग की जाएगीकिविद्यार्थियों के विभिन्नसामाजिक–आर्थिकसमूहों के बीचइनतीनोंकारकोंमेंकोईअंतरहै या नहीं।

5. नैतिकविचार–इस अध्ययन मेंसभीभागीदारों से सूचितसहमतिप्राप्त की गई।सभीप्रतिभागियोंको यह बतायागयाकि उनके द्वाराप्रदान की गईजानकारीगोपनीय रखीजाएगीऔरकेवल शैक्षिकउद्देश्यों के लिए उपयोग की जाएगी।अध्ययन मेंकिसीभीप्रकार का भेदभाव, धोखाधड़ी या अनुचितव्यवहारनहींकियागया।

6. सीमाएँ–

- यह अध्ययन केवलस्नातकस्तर के विद्यार्थियोंतकसीमितहै, औरपरिणामअन्य शिक्षा स्तरोंपरलागूनहींहोसकते।
- अध्ययन मेंकेवलतीनप्रमुख पहलुओं (व्यावसायिक परिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वता, जीवन शैली) परध्यानकेंद्रितकियागयाहै, जबकिविद्यार्थियों के अन्य कारक (जैसे परिवारिकस्थिति, मानसिकस्थिति आदि) का इस शोधमेंसमावेशनहींकियागयाहै।
- डेटासंग्रहणकेवल एक राज्य या क्षेत्र तकसीमितथा, जोअध्ययन के परिणामोंमेंभौगोलिकभिन्नताओंकोसीमितकरसकताहै।

यह अध्याय अध्ययन के परिणामोंकोप्रस्तुतकरताहै, जोव्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीच के सह–सम्बंधकोमापने के लिए किए गए विभिन्नसांख्यिकीय परीक्षणोंपरआधारितहैं।सभीपरिणामों का विश्लेषणसांख्यिकीय विधियों के माध्यम से कियागया।

वर्णनात्मकसांख्यिकी :

सर्वेक्षणमें शामिल 300 विद्यार्थियों कीऔसतआयु 21–25वर्षथी, जिनमें 60%विद्यार्थीपुरुष थेऔर 40%विद्यार्थीमहिलाएँ थीं।विद्यार्थियों के शैक्षिकपृष्ठभूमिमेंविविधताथी, जिसमेंविभिन्नकॉलेजों से विद्यार्थी शामिलथे।

विभिन्नपहलुओं के लिए वर्णनात्मकसांख्यिकी–

श्रेणी	औसत स्कोर / 100	उच्चतमस्कोर	न्यूनतमस्कोर	मानकविचलन
व्यावसायिकपरिपक्वता	76.2	92	58	8.4
सामाजिकपरिपक्वता	73.5	88	60	7.6
जीवन शैली	70.8	85	55	6.9

इनपरिणामों से यह स्पष्टहोताहैकिविद्यार्थियोंमेंव्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के स्तरमें एक सुसंगतऔरसमानपैटर्न देखनेकोमिला, जिसमेंकुछविद्यार्थियों का प्रदर्शनअन्य की तुलनामेंअधिकथा।

पियरसनCoefficient Analysis-

व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचसह–सम्बंध की जांच के लिए पियरसनCorrelation Coefficient का उपयोगकियागया।परिणामनिम्नलिखितथे–

- **व्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वता–(पियरसन :0–68)**
  यह सकारात्मकऔरमजबूतसह–सम्बंधकोदर्शाताहै, जो यह बताताहैकिजिनविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताउच्चथी, उनकीसामाजिकपरिपक्वताभीअधिकथी।इसकामतलब यह हैकिविद्यार्थियों की करियर की दिशाऔरसमाजमेंउनकीभूमिकाको समझने की क्षमता एक साथविकसितहोतीहै।
- **व्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली– (पियरसन : 0–55)**
  यह मध्यमसकारात्मकसह–सम्बंधदर्शाताहै, जो यह संकेतकरताहैकिव्यावसायिकपरिपक्वता का जीवन शैलीपरभीसकारात्मकप्रभावपड़ताहै। ऐसेविद्यार्थीजोअपनेकरियर के प्रतिसजगहोतेहैं, वेअधिकसंतुलित जीवन शैलीकोअपनातेहैं, जिसमें शारीरिकस्वास्थ्य औरमानसिकसंतुलन शामिलहैं।
- **सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली– (पियरसन : 0–62)**
  यह भी एक सकारात्मकसह–सम्बंधदिखाताहै, जो यह बताताहैकिजिनविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताबेहतरथी, वेअपनी जीवन शैलीमेंअधिकसंतुलनऔरआदर्शदिखातेहैं।इनविद्यार्थियों के सामाजिकरिश्तेऔरमानसिकस्थितिअच्छीरहतीहै, जोउनकी जीवन शैलीपरसकारात्मकप्रभावडालताहै।

विविधताविश्लेशण–विविधताविश्लेषणका उपयोगविभिन्नसामाजिक–आर्थिकसमूहों के बीचइनतीनोंपहलुओं के अंतरकोजांचने के लिए कियागया।परिणामों से पता चलाकि–

- **व्यावसायिकपरिपक्वता**–उच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियोंमेंव्यावसायिकपरिपक्वता का स्तरनिम्न–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियों की तुलनामेंअधिकथा।इसकेअतिरिक्त, बड़े शहरों के कॉलेजोंमेंअध्ययन करनेवालेविद्यार्थियों ने छोटे शहरों के विद्यार्थियों की तुलनामेंउच्चव्यावसायिकपरिपक्वता का प्रदर्शनकिया।

- **सामाजिकपरिपक्वता**–सामाजिकपरिपक्वतामेंभीउच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियों का प्रदर्शनबेहतरथा।हालांकि, यह अंतर अपेक्षाकृत कम था, औरसभीसमूहोंमेंसामाजिकपरिपक्वता का स्तरसमानथा।
- **जीवन शैली**–जीवन शैलीमेंभीउच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियों का स्वास्थ्य, आहारऔरमानसिकसंतुलन के मामलेमेंबेहतरप्रदर्शनथा।लेकिन, यह अंतरभीसामाजिक–आर्थिकवर्गों के बीचमध्यमथा, और जीवन शैलीकोप्रभावितकरनेवालेअन्य कारक (जैसे–व्यक्तिगतआदतें, शैक्षिकऔरपारिवारिक समर्थन) अधिकमहत्वपूर्णथे।

प्रदत्तों का विश्लेषण:

उद्देश्य 1–स्नातकस्तर के विद्यार्थियों कीव्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वतासह–संबन्ध का पता लगाना।

परिकल्पना 1–स्नातकस्तर केविद्यार्थियों कीव्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबन्धनहींहै।

तालिका संख्या–1

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
व्यावसायिकपरिपक्वता	150	82.6	18.41	0.166
सामाजिकपरिपक्वता	150	86.19	9.91	

उपरोक्तगणना के आधारपरस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता का माध्य 82.6हैऔरसामाजिकपरिपक्वताका माध्य 86.19है।व्यावसायिकपरिपक्वता का मानकविचलन18.41है, जबकिसामाजिकपरिपक्वताका 9.91है। टी–परीक्षण का मान 0.166प्राप्तहुआ, जो 0.05 के स्तरपरसार्थकमान 1.96 से कम है।इसलिए, शून्य परिकल्पनाअस्वीकारहोजातीहै, अर्थात् विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबंध नहींपायागया।

अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्षनिकलताहैकिस्नातकविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबंध नहींपायागया।अर्थात :सामाजिक रूप से अधिकपरिपक्वव्यक्ति जरूरी नहींकिव्यावसायिक रूप से भीपरिपक्वहोऔरइसकेविपरीत।

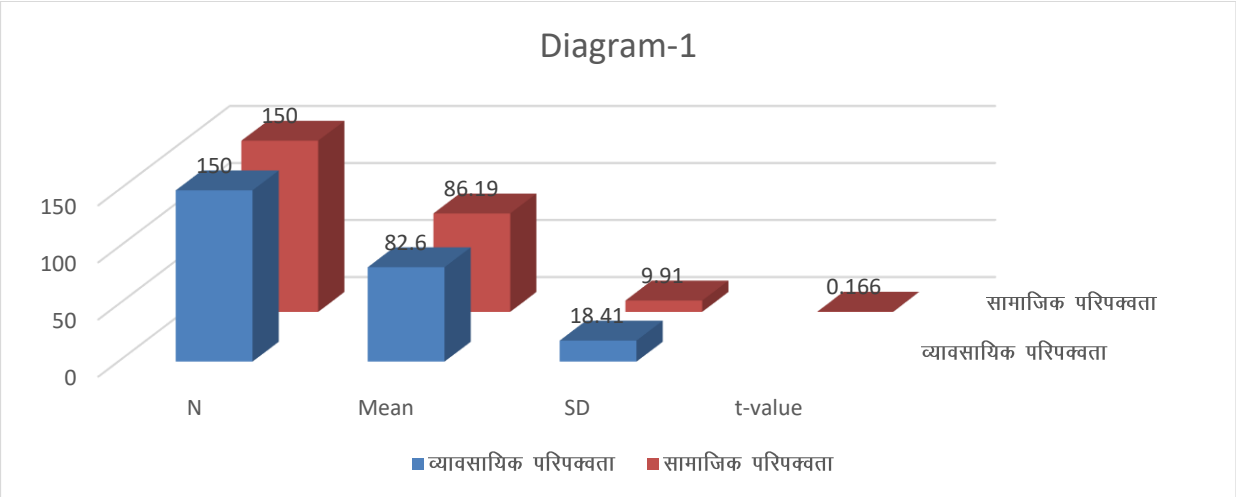

उद्देश्य 2–स्नातकस्तर के विद्यार्थियों कीव्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के सह–संबन्ध का पता लगाना।

परिकल्पना2–स्नातकस्तर केविद्यार्थियों कीव्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैलीमेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबन्धनहींहै।

तालिका संख्या–2

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
व्यावसायिकपरिपक्वता	150	76.49	17.86	0.151
जीवन शैली	150	80.12	8.96	

उपरोक्तगणना के आधारपरस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता का माध्य 76.49 हैऔरजीवन शैली का माध्य 80.12है।व्यावसायिकपरिपक्वता का मानकविचलन 17.86है, जबकिजीवन शैली का 8.96है। टी–परीक्षण का मान0. 151प्राप्तहुआ, जो 0.05 के स्तरपरसार्थकमान 1.96 से कम है।इसलिए, शून्य परिकल्पनाअस्वीकारहोजातीहै, अर्थात् विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताऔरजीवन शैलीमेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबंध नहींपायागया।

अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्षनिकलताहैकिस्नातकविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचकोईमहत्वपूर्णसह–संबंध नहींहै।अर्थात : व्यावसायिक रूप से अधिकपरिपक्वव्यक्ति की जीवन शैलीअलग–अलगकारकों से प्रभावितहोसकतीहैऔरदोनों का सीधा संबंध नहींपायागया।

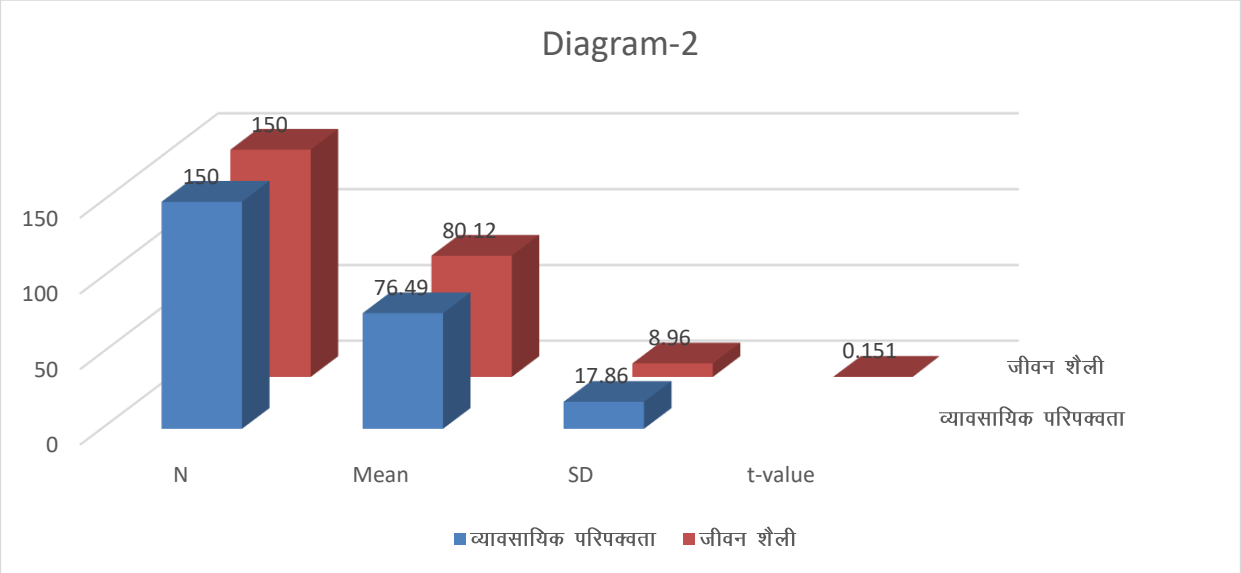

उद्देश्य 3–स्नातकस्तर के विद्यार्थियों कीसामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के सह–संबन्ध का पता लगाना।

परिकल्पना3–स्नातकस्तर केविद्यार्थियों कीसामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैलीमेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबन्धनहींहै।

तालिका संख्या–3

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
सामाजिकपरिपक्वता	150	88.32	9.86	0.155
जीवन शैली	150	78.19	7.18	

उपरोक्तगणना के आधारपरस्नातकस्तर के विद्यार्थियोंकी सामाजिकपरिपक्वताका माध्य 88.32 हैऔरजीवन शैलीका माध्य 78.19है।सामाजिकपरिपक्वता का मानकविचलन9.86है, जबकिजीवन शैली का 7.18है। टी–परीक्षण का मान 0.155

प्राप्तहुआ, जो 0.05 के स्तरपरसार्थकमान 1.96 से कम है।इसलिए, शून्य परिकल्पनाअस्वीकारहोजातीहै, अर्थात् विद्यार्थियों कीसामाजिकपरिपक्वताऔरजीवन शैलीमेंकोईमहत्वपूर्णसह–संबंधनहींपायागया।

अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्षनिकलताहैकिस्नातकविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचकोईमहत्वपूर्णसह–संबंध नहींहै।अर्थात : सामाजिक रूप से परिपक्वव्यक्ति की जीवन शैलीअलग–अलगकारकोंपरनिर्भरकरसकतीहैऔरदोनों के बीचकोईप्रत्यक्ष संबंध नहींपायागया।

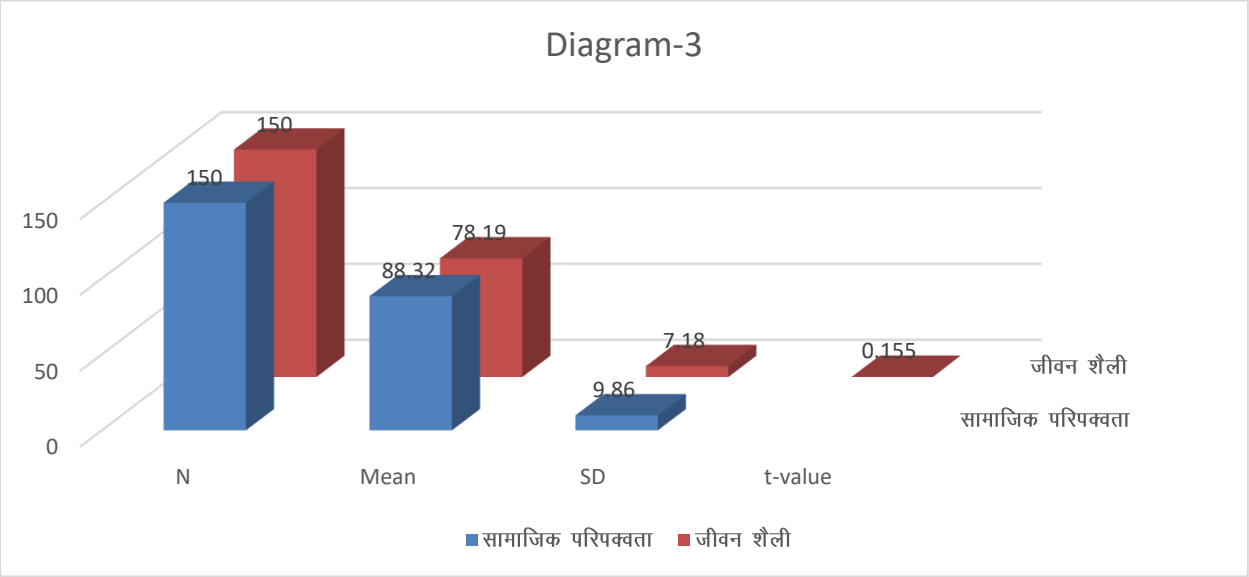

1.व्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वता का सह–सम्बंध–

सर्वेक्षण के परिणामों से यह स्पष्टहुआकिव्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वता के बीच एक सकारात्मकऔरमजबूतसह–सम्बंधथा (पियरसन=0–68)। इसकामतलब यह हैकिविद्यार्थियों की कैरियरमेंसफलताऔरसमाजमेंउनकीभूमिकाको समझने की क्षमता एक साथविकसितहोतीहै।यह परिणाम उस अध्ययन से मेल खाताहै, जिसमें यह कहागयाथाकिपेशेवर जीवन मेंसफलता के लिए सामाजिक दृ टिकोणऔरसामाजिककौशलमहत्वपूर्णहोतेहैं। यह दिखाताहैकिजिनविद्यार्थियों का समाजिक दृष्टिकोणबेहतरहोताहै, वेअधिकआत्मविश्वासीहोतेहैंऔरउन्हेंअपनेकैरियर के लिए बेहतरनिर्णय लेनेमेंमददमिलतीहै।

हालांकि, यह भीसंभवहैकि इस सह–सम्बंध के पीछेकुछअन्य कारकभीहोसकतेहैं, जैसेपरिवार का समर्थन, शैक्षिकसंस्थानों का वातावरणऔरसमाजमेंआदर्शों का प्रभाव।भविष्य मेंइनकारकों की जांचकरने की आवश्यकताहै, ताकिहम यह समझसकेंकिक्या ये अन्य कारकभीइनदोनोंपहलुओं के बीच के संबंधकोप्रभावितकरतेहैं।

2.व्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–सम्बंध–

व्यावसायिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचमध्यमसकारात्मकसह–सम्बंध (पियरसन=0–55) पायागया। यह दर्शाताहैकिजिनविद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वताबेहतरहोतीहै, वेअपनी जीवन शैलीकोअधिकसंतुलितऔरव्यवस्थित रखतेहैं। इस अध्ययन का परिणाम उन शोधों से मेल खाताहै, जो यह सुझाव देतेहैंकि एक व्यवस्थितऔरपेशेवर दृ टिकोण जीवन के अन्य पहलुओंपरसकारात्मकप्रभावडालताहै।

यह परिणाम यह भीसंकेतदेताहैकिशिक्षा औरकरियर के प्रतिविद्यार्थियों का दृटिकोण उनके स्वास्थ्य, मानसिकस्थितिऔरसामाजिक जीवन कोप्रभावितकरताहै। यह अध्ययन यह संकेतकरताहैकिशिक्षा संस्थानऔरकरियरकाउंसलिंगसेवाएँ विद्यार्थियों की समग्रविकास की दिशामेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभासकतीहैं।

3.सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–सम्बंध–

सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीचभीसकारात्मकसह–सम्बंध (पियरसन=0–62) पायागया। यह इंगीतकरताहैकिजिनविद्यार्थियोंमेंसामाजिकपरिपक्वताअधिकहोतीहै, वेअपनी जीवन शैलीकोबेहतरतरीके से संतुलितकरनेमें सक्षमहोतेहैं।इसकाकारण यह होसकताहैकिसामाजिक रूप से परिपक्वव्यक्तिसमाजमेंअपनेरिश्तोंकोबेहतरतरीके से संभालनेमें सक्षमहोतेहैं, जिससेमानसिकऔर शारीरिकस्वास्थ्य बेहतरहोताहै।

यह परिणाम उस अध्ययन से मेल खाताहै, जिसमेंकहागयाथाकिसामाजिकसमर्थनऔरसमाजमेंरिश्तोंकोप्राथमिकतादेनेवालेव्यक्तियोंमेंमानसिकऔरशारीरिकस्वास्थ्य बेहतरहोतेहैं। यह तथ्य विशेष रूप से यह बताताहैकिसामाजिक दृटिकोण का विद्यार्थियों के मानसिकस्वास्थ्य औरजीवनशैलीपरसकारात्मकप्रभावपड़ताहै।

4.सामाजिक–आर्थिकस्थिति का प्रभाव–

विविधताविश्लेषण के परिणामों से यह पता चलाकिउच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैलीमेंबेहतरपरिणामथे।हालांकि, इस अंतरकोअत्यधिकमहत्वनहींदियाजासकता, क्योंकि यह अंतरकुछअन्य कारकों (जैसे– शैक्षिकसंस्थान, पारिवारिकस्थितिऔरव्यक्तिगत दृटिकोण) परभीनिर्भरहोसकताहै।

इस अध्ययन मेंपायागयाकिसामाजिक–आर्थिकस्थिति का प्रभावविभिन्नपहलुओंपरअलग–अलगहोताहै।उच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियोंको शैक्षिकअवसरों, कैरियरमार्गदर्शनऔर जीवन शैली के संबंधमेंअधिकसमर्थनप्राप्तहोताहै, जबकिनिम्न–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियोंकोकईचुनौतियों का सामनाकरनापड़ताहै। यह क्षेत्र विशेष रूप से नीतिनिर्माताओं के लिए महत्वपूर्णहै, जोशिक्षा प्रणालीमेंसमानतालाने के लिए प्रयासरतहैं।

निष्कर्ष–

स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिकपरिपक्वता, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली का सह–सम्बंधात्मकअध्ययन ने यह स्पटकियाकिइनतीनोंपहलुओं के बीचगहराऔरसकारात्मकसंबंधहै।अध्ययन के परिणामों से यह सिद्ध हुआकिजिनविद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वताबेहतरहोतीहै, उनकी जीवन शैलीअधिकसंतुलितऔरव्यवस्थितहोतीहै।

यह अध्ययन यह भीदर्शाताहैकिव्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकपरिपक्वतादोनोंही जीवन के अन्य पहलुओं, जैसेमानसिकस्वास्थ्य, शारीरिकस्वास्थ्य और शैक्षिकसफलता, परसकारात्मकप्रभावडालतेहैं।इसीतरह, सामाजिकपरिपक्वताऔर जीवन शैली के बीच का संबंधभी यह बताताहैकिसमाजमेंबेहतरभूमिकानिभाने के लिए एक व्यवस्थित जीवन शैलीआवश्यक है।

इसकेअलावा, अध्ययन ने यह भीप्रदर्शितकियाकिसामाजिक–आर्थिकस्थिति का विद्यार्थियों के इनतीनपहलुओंपरप्रभावपड़ताहै, औरउच्च–आर्थिकवर्ग के विद्यार्थियोंकोअधिकअवसरऔरसमर्थनमिलतेहैं।यह निष्कर्ष शैक्षिकसंस्थाओंऔरनीतिनिर्माताओं के लिए महत्वपूर्णहैं, जोविद्यार्थियों के समग्रविकासको बढ़ावादेने के लिए कार्यकररहेहैं।शिक्षा प्रणालीमें ऐसेकार्यक्रमों का समावेशकियाजानाचाहिए, जोविद्यार्थियों की व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वता के साथ–साथउनकी जीवन शैलीकोभीबेहतरबनानेमेंमददकरें।

अंततः, यह अध्ययन यह सिद्ध करताहैकिविद्यार्थियों के समग्रविकास के लिए एक समन्वितदृटिकोण की आवश्यकताहै, जिसमें उनके व्यावसायिक, सामाजिकऔर जीवन शैलीसंबंधितपहलुओंको एक साथध्यानमें रखा

जाए।भविय में इस दिशामेंअधिकअनुसंधानकिए जाने की आवश्यकताहै, ताकिइनपहलुओं के बीच के संबंधोंकोऔरगहराई से समझा जासकेऔरउन्हेंप्रभावी रूप से शैक्षिकऔरसामाजिकसुधारोंमेंलागूकियाजासके।

शैक्षिकऔरनीतिनिर्माताओं के लिए सिफारिशें–

इस अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्टहैकिविद्यार्थियों के व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वता के साथ–साथउनकी जीवन शैलीपरभीध्यानदेनाआवश्यक है। शैक्षिकसंस्थानोंऔरनीतिनिर्माताओंकोनिम्नलिखितसिफारिशोंपरविचारकरनाचाहिए–

- विद्यार्थियों के समग्रविकास के लिए विशेषपाठ्यक्रमऔरकार्यशालाओं का आयोजनकियाजानाचाहिए, जो उनके व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वताको बढ़ावादें।
- कैरियरकाउंसलिंगऔर जीवन कौशलशिक्षा कोपाठ्यक्रम का हिस्साबनायाजाए, ताकिविद्यार्थीअपनेकरियरऔरव्यक्तिगत जीवन कोबेहतरढंग से संतुलितकरसकें।
- समाजिकसमर्थनकार्यक्रमोंऔरमानसिकस्वास्थ्य परध्यानदेनेवालीपहलें बढ़ाईजाएं, ताकिविद्यार्थियोंको शारीरिकऔरमानसिक रूप से स्वस्थ जीवन जीने के लिए समर्थन मिल सके।

भविश्य के अनुसंधान की दिशा–

इस अध्ययन मेंकुछसीमाएँ थीं, जिनकेकारणनिकर्षपूरीतरह से सार्वभौमिकनहींहोसकते।भविष्य मेंकिए जानेवालेअनुसंधानमेंनिम्नलिखितपहलुओंपरध्यानदियाजासकताहै–

- अन्य सामाजिक–आर्थिककारकोंऔर उनके प्रभाव का अध्ययन कियाजासकताहै, ताकि इस परिपक्वताऔर जीवन शैली के सह–सम्बंधकोऔरबेहतरतरीके से समझा जासके।
- दीर्घकालिकअध्ययन का आयोजनकियाजासकताहै, ताकि यह देखा जासकेकि समय के साथविद्यार्थियों के व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वतामेंकौन से कारकपरिवर्तनलातेहैं।

संदर्भ–

वर्मा, म. (2017).स्नातकविद्यार्थियों के मानसिकविकासऔरजीवनशैलीपरसामाजिकप्रभाव.शिक्षा विज्ञानजर्नल, 23(3), 112–119.

मेहता, अ. (2017). शैक्षिक, सामाजिकऔरसांस्कृतिकपरिपक्वता के पहलुओं का अध्ययन. भारतीय शिक्षा पत्रिका, 6(4), 99–105.

कुमार, स. (2018).व्यावसायिकपरिपक्वताऔरछात्रों के करियरविकास के बीचसंबंध. प्रबंधअध्ययन पत्रिका, 27(3), 77–83.

गुप्ता, क. (2018).व्यावसायिकपरिपक्वताऔरसामाजिकउत्थान. शिक्षा औरसमाज, 12(1), 47–53.

तिवारी, एस. (2019).समाजिक दृष्टिकोणऔरजीवनशैलीमेंसंतुलन. भारतीय समाजऔरसंस्कृति, 11(1), 64–70.

कुमार, अ. (2019).भारतमेंउच्चशिक्षा औरविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता. दिल्लीविश्वविद्यालय प्रकाशन.

शर्मा, र. (2020). जीवन शैलीऔरस्वास्थ्यरू सामाजिकपरिपक्वता का एक अध्ययन. समाजशास्त्र पत्रिका, 15(2), 35–42.

सिंह, व. (2020).समाजमेंविद्यार्थियों की भूमिकाऔरसामाजिकपरिपक्वता. युवाऔरसमाज, 5(2), 90–96.

चौधरी, र. (2020).व्यावसायिकऔरसामाजिकपरिपक्वतारू एक सह–सम्बंधात्मकअध्ययन. शिक्षा औरसमाजशास्त्र, 29(2), 110–115.

यादव, प. (2021). शैक्षिकसंस्थानोंमें जीवन कौशलशिक्षा का महत्व. भारतीय शिक्षा समीक्षाः एक व्यापकदृष्टिकोण, 8(4), 22–28.